माजुली मुखौटे, पांडुलिपि और नरसापुर क्रोशिया लेस शिल्प को मिला GI टैग का दर्जा

प्रिलिम्स के लिये:

माजुली मुखौटा, माजुली पांडुलिपि चित्रकारी, क्रोशिया लेस शिल्प, [भौगोलिक संकेतक]

मेन्स के लिये:

बौद्धिक संपदा अधिकार, पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण

[स्रोत: द हिंदू]

आंध्र प्रदेश के नरसापुर के पारंपरिक क्रोशिया लेस शिल्प को चीन के मशीन-निर्मित लेस उत्पादों से संरक्षण प्रदान करते हुए अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखने के लिये [भौगोलिक संकेतक] का दर्जा प्रदान किया गया।

- इसी प्रकार सांस्कृतिक महत्त्व का संवर्द्धन और संरक्षण प्रदान करते हुए **असम के माजुली मुखौटे तथा पांडुलिपि चित्रकारी** को GI का दर्जा प्रदान किया गया।
- इन GI टैग का उद्देश्य पारंपरिक शिल्प को पुनर्जीवित करना और उनका संवर्द्धन करना है जिससे उनकी कालजयी विरासत का संरक्षण सुनिश्चित होता है।

नरसापुर क्रोशिया लेस शिल्प से संबंधित मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

//

- **नरसापुर क्रोशिया लेस शिल्प:**
  - क्रोशिया लेस शिल्प की शुरुआत **वर्ष 1844** में हुई और इसे कई बाधाओ जैसे **भारतीय अकाल (1899) तथा** [महामंदी (1929),](#) का सामना करना पड़ा। 1900 के दशक के प्रारंभ में [गोदावरी](#) **क्षेत्र** में 2,000 से अधिक महिलाएँ लेस शिल्पकला में शामिल थीं जो इसकी सांस्कृतिक महत्त्व को उजागर करता है।
  - इस शिल्प में विभिन्न आकार की **क्रोशिया सलाई** का उपयोग कर **पतले सूती धागों के माध्यम से जटिल कलाकृतियाँ** बनाई जाती हैं।
    - इस शिल्प के कारीगर लूप और इंटरलॉकिंग टाँके बनाने के लिये एकल क्रोशिया हुक का उपयोग करते हैं जिससे उत्कृष्ट लेस पैटर्न बनते हैं।
  - नरसापुर का **हस्त निर्मित क्रोशिया उद्योग** लेस से निर्मित उत्पादों की एक विविध शृंखला का उत्पादन करता है जिनमें**वस्त्र, घरेलू सामान और सहायक उपकरण** जैसे डोयली, तकिया का कवर, कुशन का कवर, बेडस्प्रेड, टेबल-रनर, टेबल क्लॉथ, हैंड पर्स, कैप, टॉप, स्टोल, लैंपशेड तथा दीवार पर सजाई जाने वाली वस्तुएँ इत्यादि शामिल हैं।
  - यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका और फ्राँस जैसे देशों में नरसापुर के क्रॉशिया लेस उत्पादों के निर्यात के साथ ये उत्पाद वैश्विक बाज़ारों में अपनी जगह बना रहे हैं।
- **भौगोलिक संकेतक (GI) टैग:**
  - **वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय** के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन [उद्योग संवर्द्धन और आंतरिक व्यापार विभाग](#) ने संबद्ध शिल्प को भौगोलिक संकेतक रजिस्ट्री (GIR) में पंजीकृत किया तथा यह प्रामाणित किया कि यह शिल्प भौगोलिक रूप से गोदावरी क्षेत्र के**पश्चिम गोदावरी तथा डॉ. बी.आर.अंबेडकर कोनसीमा के 19 मंडलों तक सीमित** है।
    - पश्चिम गोदावरी ज़िले में नरसापुर और पलाकोले लेस उत्पादों के प्रमुख व्यापार केंद्र हैं जबकि कोनसीमा क्षेत्र में रज़ोल तथा अमलापुरम इस शिल्प के प्रमुख केंद्र हैं।
- **नरसापुर के कारीगरों के सम्मुख चुनौतियाँ:**
  - [कोविड-19 महामारी](#) के बाद से शिल्प बाज़ार स्थिर रहा है जिसके परिणामस्वरूप इन उत्पादों की मांग प्रभावित हुई है और उत्पादन में कमी आई है।
  - हालाँकि इस शिल्प में 15,000 से अधिक महिलाएँ शामिल हैं किंतु लगभग 200 ही नियमित उत्पादन में सक्रिय रूप से शामिल हैं।
  - चीन के मशीन-निर्मित लेस उत्पादों ने बाज़ार पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया है जिससे नरसापुर लेस उत्पादों की मांग के लिये एक बड़ा खतरा उत्पन्न हो गया है।

माजुली मुखौटे और माजुली पांडुलिपि पेंटिंग क्या हैं?

- **माजुली मुखौटा:**
  - माजुली मुखौटे पारंपरिक तकनीकों पर आधारित हाथ द्वारा बारीकी से तैयार किये गए मुखौटे हैं।
  - हस्तनिर्मित इन मुखौटों का प्रयोग परंपरागत रूप से **भाओना** (धार्मिक संदेशों के साथ मनोरंजन का एक पारंपरिक रूप) या **नव-वैष्णव परंपरा** के तहत **भक्ति संदेशों** के साथ **नाटकीय प्रदर्शन में पात्रों को चित्रित करने के लिये** किया जाता है, जो 15वीं-16वीं शताब्दी के सुधारक **संत श्रीमंत शंकरदेव** द्वारा शुरू की गई थी।
    - मुखौटों में देवी-देवताओं, राक्षसों, जीव-जंतुओं और पक्षियों को चित्रित किया जा सकता है जिनमें रावण, गरुड़, नरसिम्हा, हनुमान, वराह, शूर्पनखा इत्यादि शामिल होते हैं।
  - बाँस, मिट्टी, गोबर, कपड़ा, कपास और लकड़ी सहित विभिन्न सामग्रियों से बने मुखौटे का आकार सिर्फ चेहरे को ढकने से लेकर कलाकार के पूरे सिर तथा शरीर को ढकने तक होता है।
  - पारंपरिक दस्तकार समसामयिक संदर्भों को अपनाने के लिये [सात्रा](#) **(मठ)** की सीमाओं से परे जाकर माजुली मुखौटा निर्माण का आधुनिकीकरण कर रहे हैं।
    - सत्रों की स्थापना श्रीमंत शंकरदेव और उनके शिष्यों द्वारा धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक सुधार के केंद्र के रूप में की गई थी।
    - माजुली, अपने 22 सत्रों के साथ, इन सांस्कृतिक प्रथाओं का केंद्र है। मुखौटा बनाने की परंपरा मुख्य रूप से चार सत्रों**समागुरी सत्र, नतुन समागुरी सत्र, बिहिमपुर सत्र और अलेंगी नरसिम्हा सत्र** में पाई जाती है।

- **माजुली पांडुलपि पिंटगि:**
  - पाल कला **बौद्ध कला की शैली** को संदर्भति करती है जो **पूर्वी भारत के पाल साम्राज्य** (8वीं-12वीं शताब्दी) में वकिसति हुई थी। इसकी वशिषता इसके जीवंत रंग, वस्तिृत कार्य और धार्मकि वषियों पर ज़ोर है।
  - माजुली की पांडुलपि पिंटगि धार्मकि कला का एक रूप है जो पूजा पर केंद्रति द्वीप की वैष्णव संस्कृति से नकिटता से जुड़ी हुई है।
  - इस कला के सबसे शुरुआती उदाहरणों में से एक का श्रेय श्रीमंत शंकरदेव को दिया जाता है, जो असमिया में भागवत पुराण के आद्य दशम को दर्शाते हैं। माजुली के हर सत्र में इसका अभ्यास जारी है।
  - **माजुली पांडुलपि पिंटगि** पाला **स्कूल ऑफ पेंटगि कला** से प्रेरति हैं।

JOINED BY BORDERS, DIVIDED BY CULTURES

Having got GI tags for 34 products, Karnataka has the most number of registrations, followed by Maharashtra (26) and Odisha (23)

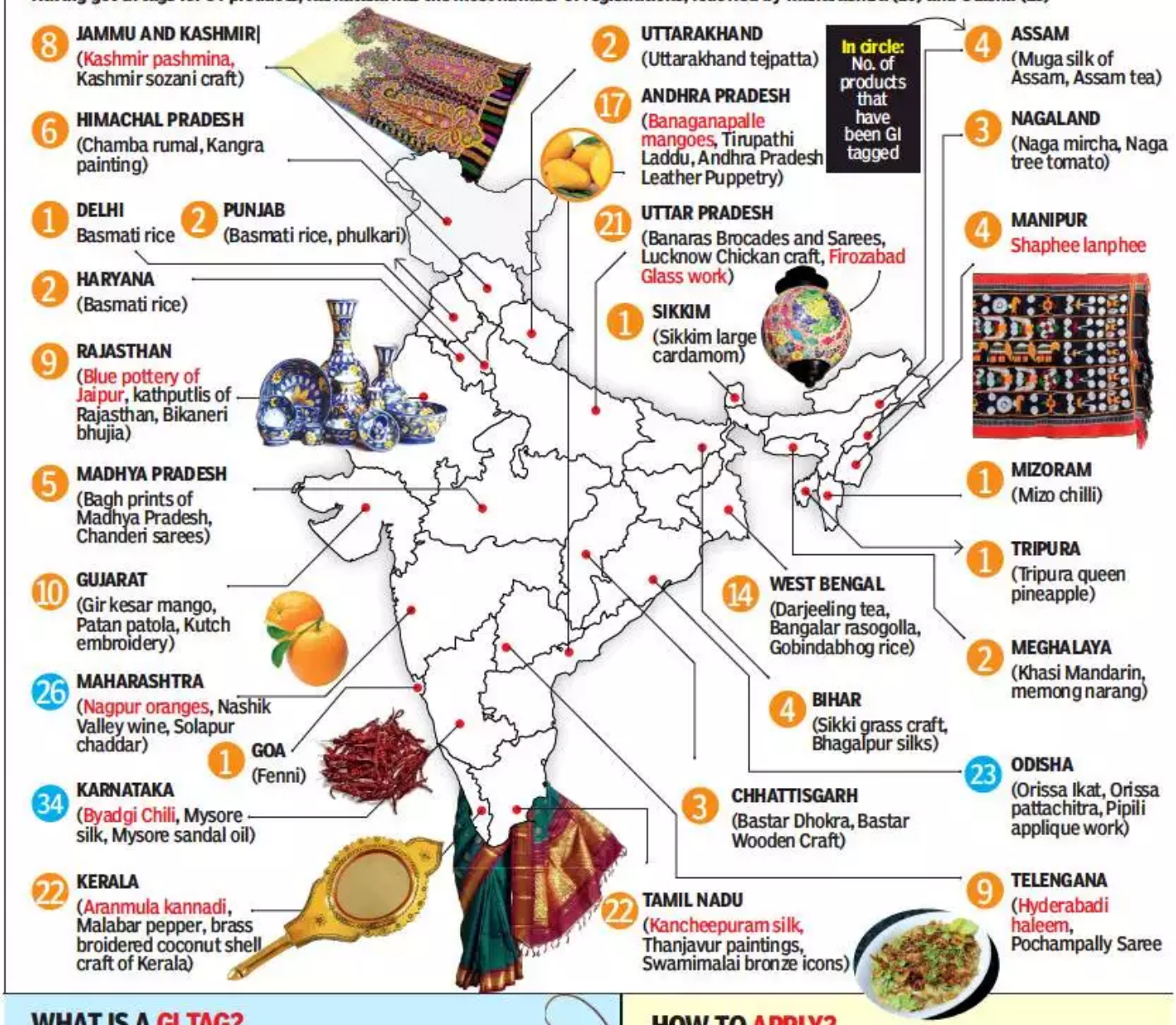

WHAT IS A GI TAG?

- A GI tag is a geographical indication of an item which is specific to a particular place
- GI status can be sought for agricultural products, handicrafts, handloom and food products
- The RGI (registration of geographical indications) logo given to a particular product can only be used by registered and authorised users
- When marketed, a GI tagged product must carry a logo showing its place of origin
- Civil and criminal proceedings can be initiated against those using the logo in unauthorised manner

GI TAG

HOW TO APPLY?

- An association or collective body can apply to GI Registry
- Application should be backed by proof of uniqueness, historical records to show proof of origin, quality and special character
- After rounds of verification, presentation and meetings, if registry is satisfied, application goes to GI Registry journal
- If application receives no opposition within four months, it gets the GI tag

और पढ़ें: [भारत का भौगोलिक संकेतक परिदृश्य](), [17 से अधिक उत्पादों के लिये GI टैग]()

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. निम्नलिखित में से किसे 'भौगोलिक संकेतक' का दर्जा प्रदान किया गया है? (2015)

1. बनारस के जरी वस्त्र एवं साड़ी
2. राजस्थानी दाल-बाटी-चूरमा
3. तिरुपति लड्डू

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

(a) केवल 1
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (c)

प्रश्न. भारत ने वस्तुओं के भौगोलिक संकेतक (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999 को किसके दायित्वों का पालन करने के लिये अधिनियमित किया? (2018)

(a) अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन
(b) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
(c) व्यापार एवं विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन
(d) विश्व व्यापार संगठन

उत्तर: (d)

??????:

प्रश्न. भैषजिक कंपनियों के द्वारा आयुर्विज्ञान के पारंपरिक ज्ञान को पेटेंट कराने से भारत सरकार किस प्रकार रक्षा कर रही है? (2019)

भारत में बढ़ते मोटापे की समस्या

प्रिलिम्स के लिये:

विश्व स्वास्थ्य संगठन, बॉडी मास इंडेक्स, मोटापा, मिशन पोषण 2.0, मध्याह्न भोजन योजना, पोषण वाटिकाएँ,

मेन्स के लिये:

कुपोषण, भारत में कुपोषण से निपटने हेतु कदम, सरकारी नीतियाँ और हस्तक्षेप

स्रोत:द हिंदू

चर्चा में क्यों?

? ?????? में प्रकाशित एक हालिया **अध्ययन** ने **दुनिया भर में पिछले कुछ दशकों में बच्चों, किशोरों एवं वयस्कों में मोटापे की दर में चिंताजनक वृद्धि** पर प्रकाश डाला है।

- यह व्यापक विश्लेषण विश्व स्वास्थ्य संगठन के सहयोग से **NCD** के जोखिम कारकों पर सहयोग (NCD-RisC) द्वारा आयोजित किया गया था।
- अध्ययन में यह समझने हेतु बॉडी मास इंडेक्स पर गौर किया गया कि **वर्ष 1990 से 2022** तक **दुनिया भर में मोटापे और कम वज़न में परिदृश्य** कैसे बदल गया है।

नोट:

- NCD-RisC दुनिया भर के स्वास्थ्य वैज्ञानिकों का एक नेटवर्क है जो दुनिया के सभी देशों के लिये गैर-संचारी रोगों के प्रमुख जोखिम कारकों पर

प्रमुख और समय पर डेटा प्रदान करता है।

अध्ययन की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

- **भारत के आँकड़े:**
  - **मोटापा:**
    - लैंसेट ने जारी किये कि वर्ष 2022 में भारत में 5-19 वर्ष की आयु के **12.5 मिलियन बच्चों (7.3 मिलियन लड़के और 5.2 मिलियन लड़कियाँ)** को अत्यधिक अधिक वज़न वाले के रूप में वर्गीकृत किया गया था, जो **वर्ष 1990 में 0.4 मिलियन की महत्त्वपूर्ण वृद्धि** दर्शाता है।
    - लड़कियों और लड़कों में मोटापे की श्रेणी के प्रसार के मामले में **भारत वर्ष 2022 में दुनिया में 174वें स्थान** पर था।
    - वयस्क **महिलाओं में** मोटापे की दर वर्ष 1990 में 1.2% से बढ़कर वर्ष 2022 में 9.8% हो गई और इसी अवधि में पुरुषों में 0.5% से 5.4% हो गई।
  - **कुपोषण:**
    - भारत में भी **अल्पपोषण की व्यापकता अधिक** बनी हुई है, परिणामस्वरूप, भारत कुपोषण के **उच्च "दोहरे बोझ" वाले देशों में से एक** बन गया है।
      - 13.7% महिलाएँ एवं 12.5% पुरुष कम वज़न वाले थे।
    - **दुबलापन**, बच्चों में कम वज़न की एक माप जो **लड़कियों में 20.3% की व्यापकता के साथ दुनिया में सबसे अधिक** है।
      - यह **21.7% की व्यापकता के साथ लड़कों में दूसरे स्थान पर** था।
- **वैश्विक:**
  - विश्व भर में मोटापे से ग्रस्त बच्चों, किशोरों और वयस्कों की कुल संख्या **एक अरब से अधिक हो** गई है।
    - कुल मिलाकर वर्ष 2022 में 159 मिलियन बच्चे और किशोर तथा 879 मिलियन वयस्क मोटापे से ग्रस्त थे।
  - मोटापे में वृद्धि के कारण अधिकांश देशों में **कम वज़न और मोटापे का संयुक्त भार बढ़** गया है, जबकि **दक्षिण एशिया और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में कम वज़न और पतलापन** प्रचलित है।
  - वर्ष 2022 में, कैरेबियन पोलिनेशिया और माइक्रोनेशिया के द्वीप देशों तथा **मध्य पूर्व एवं उत्तरी अफ्रीका के देशों में कम वज़न व मोटापे का संयुक्त प्रसार सबसे अधिक** था।
  - **वर्ष 2022 में पतलेपन और मोटापे की संयुक्त व्यापकता** वाले देश **पोलिनेशिया, माइक्रोनेशिया तथा कैरेबियन** दोनों लिंगों हेतु एवं चिली व कतर लड़कों के लिये थे।
    - भारत और पाकिस्तान जैसे दक्षिण एशिया के कुछ देशों में भी संयुक्त प्रसार अधिक था, जहाँ गरीबी के बावजूद पतलापन प्रचलित रहा।
- **मोटापे में योगदान देने वाले कारक:**
  - **महिलाओं में वज़न बढ़ने की संभावना अधिक होती है क्योंकि उनके पास अक्सर व्यायाम** के लिये समय नहीं होता है और वे अपने परिवार के पोषण को अपने पोषण से अधिक प्राथमिकता देती हैं।
  - घरेलू ज़िम्मेदारियों के कारण भी उन्हें **कम नींद** आती है।
  - इसके अतिरिक्त **अस्वास्थ्यकर जंक फूड पौष्टिक विकल्पों की तुलना में सस्ता और अधिक आसानी से उपलब्ध है** , जिससे मोटापे की दर बढ़ जाती है, यहाँ तक कि तमिलनाडु, पंजाब तथा गोवा जैसे स्थानों में कम आय वाले लोगों में भी।

अधिक वज़न, पतलापन और मोटापा क्या हैं?

- **बॉडी मास इंडेक्स:**
  - BMI वज़न-से-ऊँचाई (**weight-to-height**) का एक माप है जिसका प्रयोग आमतौर पर वयस्कों में कम वज़न, अधिक वज़न और मोटापे को वर्गीकृत करने के लिये किया जाता है।
  - इसकी गणना किलोग्राम में वज़न को मीटर (किलो/वर्ग मीटर या kg/m^2) में ऊँचाई के वर्ग से विभाजित करके की जाती है।
    - उदाहरण के लिये, 58 किलोग्राम वज़न वाले और 1.70 मीटर लंबे वयस्क का बीएमआई 20.1 होगा (बीएमआई = 58 किलोग्राम / (1.70 मीटर ×1.70 मीटर))।
- **मोटापा और अधिक वज़न:**
  - अधिक वज़न और मोटापे को असामान्य या अत्यधिक वसा संचय के रूप में परिभाषित किया गया है जो स्वास्थ्य जोखिम उत्पन्न करता है।
  - अधिक वज़न अत्यधिक वसा जमा होने की स्थिति है और **मोटापा एक क्रॉनिक बीमारी** है जो तब होती है जब शरीर अतिरिक्त कैलोरी को वसा के रूप में संग्रहीत करता है।
    - मोटापा हृदय रोग, मधुमेह, मस्क्यूलोस्केलेटल विकार और कुछ कैंसर जैसी पुरानी बीमारियों के लिये एक प्रमुख जोखिम कारक है।
    - बाल्यावस्था का मोटापा गंभीर स्वास्थ्य जटिलताओं और समय से पहले संबंधित बीमारियों के शुरू होने के बढ़ते जोखिम से जुड़ा है।
  - मोटापा कुपोषण **के दोहरे बोझ** का एक पक्ष है और आज दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र को छोड़कर हर क्षेत्र में **अधिकांश लोग कम वज़न वाले लोगों की तुलना में मोटापे से ग्रस्त** हैं।
- **दुबलापन और कम वज़न:**
  - दुबलेपन और कम वज़न का तात्पर्य ऊँचाई के सापेक्ष **शरीर का वज़न सामान्य वज़न से कम होना** है। यह प्रायः अपर्याप्त कैलोरी सेवन या अंतर्निहित स्वास्थ्य स्थितियों से जुड़ा होता है।

- कम वज़न **अल्पपोषण के चार व्यापक उप-रूपों में से एक** है।
  - यदि किसी वयस्क का **BMI 18 kg/m2 से कम** है तो उसे कम वज़न का माना जाता है। स्कूल जाने वाले बच्चों और किशोरों को कम वज़न का माना जाता है यदि उनका BMI औसत से दो मानक विचलन कम है।
  - **अल्पपोषण चार व्यापक रूपों में परिलक्षित होता है:** वेस्टिंग, स्टंटिंग, कम वज़न और सूक्ष्म पोषक तत्त्वों की कमी।
- कम वज़न होने से विभिन्न स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं, जिनमें **ऑस्टियोपोरोसिस, त्वचा, बाल या दांतों की समस्याएँ, निरंतर बीमारियाँ, थकान, एनीमिया, अनियमित मासिक धर्म, समय-पूर्व जन्म, विकृत विकास** और **मृत्यु दर का जोखिम बढ़ना** शामिल है।

पोषण सुधार से संबंधित भारत की क्या पहल हैं?

- ईट राइट मेला
- फिट इंडिया मूवमेंट
- ईट राइट स्टेशन प्रमाणन
- मिशन पोषण 2.0
- मध्याह्न भोजन योजना
- पोषण वाटिकाएँ
- आँगनवाड़ी
- समेकित बाल विकास सेवा योजना
- प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना

आगे की राह

- मोटापे और कम वज़न को अलग-अलग नहीं माना जाना चाहिये, क्योंकि कम वज़न-मोटापे का **संक्रमण तेज़ी** से हो सकता है, जिससे उनका संयुक्त बोझ अपरिवर्तित या अधिक हो सकता है।
- उन कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित करना होगा **जो स्वस्थ पोषण को बढ़ाते हैं,** जैसे लक्षित नकद हस्तांतरण, स्वस्थ खाद्य पदार्थों के लिये सब्सिडी या वाउचर के रूप में खाद्य सहायता, मुफ्त स्वस्थ स्कूल भोजन और प्राथमिक देखभाल-आधारित पोषण संबंधी हस्तक्षेप।
- **मोटापे से ग्रस्त लोगों को वज़न घटाने में सहायता की तत्काल** आवश्यकता है।
- रोकथाम और प्रबंधन विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि मोटापे की शुरुआत की उम्र कम हो गई है, जिससे जोखिम की अवधि बढ़ जाती है।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. ग्लोबल हंगर इंडेक्स रिपोर्ट की गणना के लिये IFPRI द्वारा उपयोग किये जाने वाले संकेतक निम्नलिखित में से कौन-सा/से है/हैं? (2016)

1. अल्पपोषण
2. चाइल्ड स्टंटिंग
3. बाल मृत्यु दर

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

(a) केवल 1
(b) 1, 2 और 3
(c) केवल 2 और 3
(d) केवल 1 और 3

उत्तर: (c)

प्रश्न. राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013 के अधीन बनाए गए उपबंधों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2018)

1. केवल वे ही परिवार सहायता प्राप्त खाद्यान्न लेने की पात्रता रखते हैं जो ''गरीबी रेखा से नीचे'' (बी.पी.एल) श्रेणी में आते हैं।
2. परिवार में 18 वर्ष या उससे अधिक उम्र की सबसे अधिक उम्र वाली महिला ही राशन कार्ड निर्गत किये जाने के प्रयोजन से परिवार की मुखिया होगी।
3. गर्भवती महिलाएँ एवं दुग्ध पिलाने वाली माताएँ गर्भावस्था के दौरान और उसके छ: महीने बाद तक प्रतिदिन 1600 कैलोरी वाला राशन घर ले जाने की हकदार हैं।

उपर्युत्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) 1 और 2
(b) केवल 2
(c) 1 और 3
(d) केवल 3

उत्तर: (b)

?????:

प्रश्न. आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं कि भूख के मुख्य कारण के रूप में खाद्य की उपलब्धता की कमी पर मुख्य फोकस भारत में अप्रभावी मानव विकास नीतियों से ध्यान हटा देता है? **(2018)**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/current-affairs-news-analysis-editorials/news-analysis/06-03-2024/print